

दुःसंग पुं. (तत्.) कुसंगति, बुरे लोगों का साथ।

दुःसंधान पुं. (तत्.) 1. खराब संयोग या जोड़, कठिनता से आपस में मिलना 2. आचार्य केशवदास के अनुसार काव्य में एक प्रकार का ऐसा रस जहाँ एक अनुकूलता और दूसरा प्रतिकूलता को प्रस्तुत करता है, वहाँ अनुकूल और प्रतिकूल दोनों की स्थिति होती है।

दुःसंधेय वि. (तत्.) कठिनाई से आपस में मेल कराने के योग्य, कठिनाई से जोड़े जाने या जोड़ लगाने के योग्य।

दुःसह वि. (तत्.) कठिनता से सहन करने योग्य, असह्य अत्यधिक कष्टदायी।

दुःसाधी वि. (तत्.) कठिन काम को कर देने वाला पुं. द्वारपाल।

दुःसाध्य वि. (तत्.) 1. कठिनता से संपन्न करने योग्य, बड़ी मुश्किल से करने लायक, दुष्कर 2. असाध्य जिसका उपाय और प्रतिकार कठिन हो (रोग या काम)।

दुःसाहस पुं. (तत्.) 1. असंभव या दुष्कर कार्य की सिद्धि के लिए किया गया साहस 2. अनुचित साहस, ऐसा साहस जिसका फल कुछ न हो अथवा जिससे कुछ भी लाभ न हो, निष्फल प्रयास 3. धृष्टता।

दुःसाहसी/दुस्साहसी वि. (तत्.) 1. अनुचित साहस करने वाला या ढिठाई करने वाला 2. हठ या निष्फल प्रयास/कार्य के लिए साहस करने वाला।

दुःस्थिति स्त्री. (तत्.) खराब स्थिति, दुर्दशा, बुरी हालत।

दुःस्पर्श वि. (तत्.) 1. जिसे छूना कठिन या अनुपयुक्त हो 2. दुर्लभ पुं. करंज की बेल, एक प्रकार का क्षुप जिसके फल की औषधि बनती है, कंटकारी (भटकटैया) का पौधा, कपिकच्छु (केवाँच) की काँटेदार फली जिन्हें छूना कष्टकारी है।

दुःस्वप्न पुं. (तत्.) मनो. खराब सपना, अशुभ सपना जिसका फल बुरा हो, भयभीत कर देने वाला स्वप्न।

दुःस्वभाव पुं. (तत्.) खराब स्वभाव, दुःशील, नीचता या कुटिलता से भरा स्वभाव, दुष्ट प्रकृति, खराब मिजाज वि. दुष्ट प्रकृति वाला, नीच आदत वाला, बदमिजाज, बुरे स्वभाव का।

दु वि. (तद्.) संख्यावाचक दो शब्द का संक्षिप्त रूप जिसका प्रयोग समस्त पदों में पूर्वपद (दु) के रूप में किया जाता है, जैसे- दुपहरी।

दुअन्नी स्त्री. (तद्.) रुपये का आठवाँ भाग, दो आने का सिक्का जो अब प्रचलन नहीं हैं।

दुआ स्त्री. (अर.) 1. विनती, ईश्वर से की जाने वाली प्रार्थना 2. शुभकामना, आशीर्वाद मुहा. दुआ करना या मांगना- प्रार्थना करना; दुआ लगाना- प्रार्थना का सफल होना या आशीर्वाद का फल मिलना।

दुआब, दुआबा पुं. (फा.) जिसके दोनों ओर पानी (की नदी) हो, दो नदियों के बीच का भूखंड या प्रदेश।

दुइ वि. (तद्.) दे. दो।

दुकड़ी पुं. (तद्.) 1. एक साथ दो वस्तुओं वाली चीज, युग्म 2. दो-दो बंधन वाली चारपाई की बुनावट जो एक साथ बुनी जाती है 2. दो घोड़ों वाली बग्गी, घोड़ों का दोहरा सामान 4. दो कड़ियों वाला बर्तन, कड़ाही, कंडाल, दो कड़ियों वाली लगाम।

दुकान स्त्री. (फा.) बिक्री की चीजें रखने का कक्ष या स्थान या जगह जहाँ जाकर ग्राहक स्वयं वस्तुएँ खरीदते हों, सौदा बिकने की जगह, माल खरीदने की जगह, हट्ट मुहा. 1. दुकान लगाना- अनेक प्रकार के सामान को बिक्री के लिए दुकान में रखना, चीजें बेचने के लिए फैलाकर रखना, (व्यंग्य में), अनेक वस्तुओं को इधर-उधर फैलाकर रख देना; दुकान चलना- दुकान में होने वाली बिक्री की बढ़ोतरी होना; दुकान बढ़ाना- दुकान बंद करना; दुकान उठाना- दुकान का कारबार बंद करके दुकानदारी छोड़ देना।

दुकानदार पुं. (फा.) 1. दुकान का मालिक, दुकान पर बैठकर वस्तुओं की बिक्री करने वाला 2. दुकान वाला 3. परोपकार का ढोंग रचकर धन अर्जित करने वाला।